

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 6, इतिहास की छाया से बाहर, मिथकों का निवारण © 2024

केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक हैं जो वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपना व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र संख्या छह है, इतिहास की छाया से बाहर, मिथकों का निराकरण।

इस उपदेश के लिए शास्त्र 1 तीमुथियुस 1, आयत 3 से 5 तक है। परमेश्वर के वचन को सुनें। मैं तुमसे वहाँ भी आग्रह करता हूँ, जैसा मैंने मकिदुनिया जाते समय किया था, कि तुम इफिसुस में रहो ताकि तुम कुछ लोगों को निर्देश दे सको कि वे कोई अलग सिद्धांत न सिखाएँ और मिथकों और अंतहीन वंशावली में खुद को व्यस्त न रखें जो विश्वास से ज्ञात ईश्वरीय प्रशिक्षण के बजाय अटकलों को बढ़ावा देते हैं। लेकिन इस तरह के निर्देश का उद्देश्य प्रेम है जो शुद्ध हृदय, अच्छे विवेक और सच्चे विश्वास से आता है।

प्रभु का वचन। परमेश्वर का धन्यवाद। पौलुस ने ये शब्द अपने शिष्य तीमुथियुस को लिखे थे, ताकि उसे और मसीह में विश्वास करने वाले अन्य नए लोगों को चेतावनी दी जा सके कि मसीह के साथ अपने रिश्ते पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है, न कि अपनी वंशावली या उत्पत्ति की पौराणिक कहानियों पर जोर देने की मानसिकता में फंस जाना चाहिए, जो मसीह में विश्वास में निराधार थीं।

ऐसा करने का मतलब था कि किसी व्यक्ति की विश्वसनीयता को वंशावली या उपलब्धियों के आधार पर स्थापित करने का प्रयास करना, न कि यीशु मसीह की कृपा और दया के माध्यम से प्रकट किए गए त्रिदेवों के प्रेम पर आधारित विश्वास पर। वाल्डेन्सियन आंदोलन की उत्पत्ति की खोज में, प्राथमिक ऐतिहासिक कथा के दो वैकल्पिक विवरण हैं जो वाल्डेज़ के जीवन पर आधारित हैं। इसके अलावा, प्रत्येक वैकल्पिक कथा के भीतर कई भिन्नताएँ हैं, जो इतिहास के छात्रों को भ्रमित करती हैं।

वाल्डेन्सियन आंदोलन की स्थापना की उत्पत्ति की कई कहानियाँ हैं, जिनमें 9वीं शताब्दी में ट्यूरीन के एक विलक्षण कैथोलिक बिशप क्लाउड की शिक्षा का संदर्भ शामिल है। इसके अलावा, चौथी शताब्दी ईस्वी में कॉन्स्टेंटाइन की कहानी से भी पुराना एक और विवरण मिलता है। कॉन्स्टेंटाइन द्वारा चर्च को दिए गए उपहार की कहानी ही वह है जिसकी ओर हम सबसे पहले मुड़ते हैं।

कहा जाता है कि अपनी मृत्यु के समय, कॉन्स्टेंटाइन ने चौथी शताब्दी ई. की शुरुआत में रोमन साम्राज्य का आधा हिस्सा पोप सिल्वेस्टर को दे दिया था। यह ध्यान देने योग्य है कि ऐतिहासिक विद्वानों ने निर्धारित किया है कि कॉन्स्टेंटाइन के दान की कहानी अपने आप में एक मिथक थी। मूल रूप से रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा 8वीं शताब्दी ई. में चर्च द्वारा रोमन चर्च के भीतर और बाहर दोनों जगह आलोचकों के समक्ष धन और संपत्ति के अपने बड़े अधिग्रहण को उचित ठहराने के साधन के रूप में बनाया गया था।

यह कथात्मक मिथक, जिसे मूल रूप से 8वीं शताब्दी में गढ़ा गया था, को सैकड़ों साल बाद वाल्डेन्सियन विश्वासियों द्वारा रोमन कैथोलिक चर्च के विरोध में प्रारंभिक चर्च के भीतर एक प्राचीन विभाजन के रूप में परिभाषित किया गया था, जिसने महान धन और शक्ति की प्राप्ति को स्वीकार किया और उससे लाभ उठाया। और इसलिए वे कहते हैं कि रोमन पोंटिफ़ प्रेरित पतरस के उत्तराधिकारी नहीं बल्कि कॉन्स्टेंटाइन के उत्तराधिकारी हैं। कॉन्स्टेंटाइन के दान के मिथक को चर्च के कम-ज्ञात, छोटे, लेकिन वफादार अवशेष के अस्तित्व का सुझाव देने के लिए और संशोधित किया गया था, जिसने गरीबी और विनम्रता की शपथ द्वारा चिह्नित मसीह के सेवक मंत्रालय पर ध्यान केंद्रित करने के महत्व पर जोर दिया था।

कॉन्स्टेंटाइन के दान के संशोधित मिथक को 13वीं शताब्दी के अंत में वाल्डेन्सियन अनुयायियों द्वारा मौखिक रूप से व्यापक रूप से संप्रेषित किया गया था। इसे इस प्रकार दर्शाया गया है। कॉन्स्टेंटाइन के दान तक चर्च पवित्र था जब सिल्वेस्टर I ने दान स्वीकार कर लिया जबकि सिल्वेस्टर के एक साथी ने इनकार कर दिया और उसे छोड़ दिया।

धीरे-धीरे, चर्च का बड़ा हिस्सा बुराई में गिर गया जबकि चर्च का एक छोटा हिस्सा सच्चाई में बना रहा। यह रोम के विरोध की व्याख्या का पहला चरण है, दान के समय छोटे पवित्र चर्च के विभाजन की ऐतिहासिक उत्पत्ति। और बाद के चरण का नेतृत्व वाल्डेन्सियन द्वारा किया जाना है, हालांकि जरूरी नहीं कि यह उनके साथ ही हो।

जो लोग इस मूल कहानी की ओर इशारा करते हैं, वे इस विश्वास को मानते हैं कि सच्चे चर्च की निरंतर गवाही प्रेरितों के युग से लेकर ईसाइयों के एक अपेक्षाकृत छोटे समूह की वफादार गवाही तक जारी रही, जो स्वयं मसीह के सच्चे अनुयायी थे, जो वाल्डेन्सियन के पूर्वज थे। इस मिथक की दर्ज इतिहास में सबसे पुरानी तारीख 1367 में लिखी गई बुक ऑफ द इलेक्ट नामक स्रोत में पाई जाती है। 1367 के पत्र में दान के समय रोमन चर्च में विभाजन के बारे में विस्तार से बताया गया है, जब कॉन्स्टेंटाइन द्वारा 325 में दिए गए रोमन साम्राज्य की आधी संपत्ति रोमन चर्च को दे दी गई थी।

चर्च के भीतर विभाजन सिल्वेस्टर I के बीच हुआ था, जिसने सम्राट कॉन्स्टेंटाइन से धन और भूमि स्वीकार की थी, और उन कुछ वफादार लोगों के बीच जो गरीबी को स्वीकार करने के लिए दृढ़ थे और शुद्ध चर्च बने रहना चाहते थे। चुने हुए लोगों की पुस्तक ने उन लोगों के कामों का वर्णन किया जो प्रेरितों के स्थान पर थे, और यह प्रेरितों के कामों से जानबूझकर प्रतिध्वनि द्वारा रेखांकित किया गया है। सैकड़ों वर्षों से, वाल्डेन्सियन लोगों की उत्पत्ति की कहानी को सटीक रूप से इंगित करना मुश्किल रहा है।

यह आंशिक रूप से इस तथ्य के कारण है कि वाल्डेन्सियन के दर्ज इतिहास का इतना हिस्सा रोमन चर्च द्वारा उनके पाखंड के सबूत के रूप में इस्तेमाल किया गया था और बाद में मुकदमा समाप्त होने के बाद जांचकर्ताओं द्वारा जला दिया गया था। हम वाल्डेन्सियन कहानी की उत्पत्ति के इर्द-गिर्द ऐतिहासिक तथ्यों की खोज की ओर मुड़ते हैं। यह लंबे समय से माना जाता है कि वाल्डेज़, ल्योन के वाल्डो, 1172 में, वाल्डेन्सियन आंदोलन के प्रवर्तक थे।

उनके अस्तित्व और उनके द्वारा शुरू किए गए मंत्रालय का समर्थन करने के लिए पर्याप्त ऐतिहासिक डेटा मौजूद है, जो ल्योन के आस-पास के क्षेत्र में पड़े अकाल से उभरा था। वाल्डो के अनुयायियों और ट्यूरिन के क्लाउड की शिक्षाओं के बीच धार्मिक आधार के स्रोत की संभावना का सुझाव देने वाले सबूत भी हैं, जिन्हें रोमन कैथोलिक चर्च में वर्ष 817 में ट्यूरिन के बिशप के रूप में नियुक्त किया गया था। क्लाउड एक मुखर इंजील ईसाई नेता थे जो बाइबल के एक चतुर और समझदार छात्र थे।

दोनों नियमों से धर्मग्रंथों की अपनी व्याख्या के आधार पर, क्लाउड ने कैथोलिक धर्म में पवित्र छवियों की पूजा का विरोध किया। उन्होंने अपने सूबा के भीतर सभी चर्चों से उन्हें हटाने की मांग की। उन्होंने विश्वास के औचित्य के सिद्धांत का प्रचार किया।

क्लाउड ने पापमोचन और अवशेषों की पूजा को भी अस्वीकार कर दिया और प्रायश्चित के साधन के रूप में तीर्थयात्रा की प्रभावशीलता को अस्वीकार कर दिया। जब क्लाउड ने सूबा के भीतर चर्चों में पूजनीय पवित्र छवियों को बाहर फेंक दिया, तो उन्होंने कहा कि अगर लोग क्रॉस की पूजा करना चाहते हैं क्योंकि मसीह उस पर लटका हुआ था, तो उन्हें चरनी की भी पूजा करनी चाहिए क्योंकि वह चरनी में लेटा था या गधे की भी पूजा करनी चाहिए क्योंकि वह चरनी पर सवार था। ऐसा कोई ऐतिहासिक साक्ष्य या दस्तावेज मौजूद नहीं है जो क्लाउड की शिक्षाओं और 12वीं शताब्दी में वाल्डो और ल्योन के गरीबों के उद्भव के बीच सीधा ऐतिहासिक संबंध प्रदान करता हो।

यह संभव है कि उत्तरी इटली के पीडमोंट क्षेत्र के रोमन कैथोलिकों ने क्लाउड की अपरंपरागत लेकिन बाइबिल के अनुसार सटीक मान्यताओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया हो। हालांकि, क्लाउड और बाद में ब्रेशिया के वाल्डो और अर्नोल्ड द्वारा रखे गए विश्वास और व्यवहार के समानांतरों को जोड़ने वाले किसी भी ऐतिहासिक दस्तावेज़ के बिना, यह आसानी से नहीं निकाला जा सकता है कि क्लाउड ने वाल्डो और अर्नोल्ड को सीधे प्रभावित किया था। विश्वास में समानताएँ विश्वास के एक ही स्रोत, मुख्य रूप से न्यू टेस्टामेंट गॉस्पेल और पॉल के पत्रों का अध्ययन करके प्राप्त की जा सकती हैं।

क्लाउड के 300 से ज़्यादा साल बाद, ब्रेशिया के अर्नोल्ड ने मिलान के आस-पास लोम्बार्डी के क्षेत्र में छोटे-छोटे समुदायों को इकट्ठा करना शुरू किया, जो ट्यूरिन के सूबा से सटा हुआ था। अर्नोल्ड ने पीटर एबेलार्ड के साथ अध्ययन किया था और मसीह के शिष्य बनने और अपनी संपत्ति को अपने पड़ोसियों के साथ साझा करने के आधार पर ईसाई धर्म और समुदाय के मॉडल का निर्माण करना शुरू किया था। अर्नोल्ड ने प्रारंभिक चर्च की शिक्षाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में बताया गया है।

अपने अध्ययनों से, उन्होंने धनी रोमन कैथोलिक चर्च और उसकी मान्यताओं और प्रथाओं के लिए एक वैकल्पिक आस्था समुदाय का आयोजन किया। हालाँकि बिशप क्लाउड को वाल्डेन्सियन के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, लेकिन रोमन कैथोलिक बिशप के रूप में उनकी घोषणाओं के वाल्डेन्सियन की ईसाई मान्यताओं के साथ समानांतर निष्कर्ष निर्विवाद है, और यह संभावना बनी हुई है कि क्लाउड की मान्यताओं ने अर्नोल्ड और उनके अनुयायियों

को प्रभावित किया क्योंकि उन्होंने अपने स्वयं के आस्था समुदायों का विकास किया। संयोग से, यह ध्यान देने योग्य है कि 20वीं शताब्दी के दौरान, इटली में वाल्डेन्सियन चर्च ने ट्यूरिन के बिशप क्लाउड की बाइबिल की गवाही को मान्यता देते हुए अपने आधिकारिक प्रकाशन गृह का नाम क्लाउडियाना प्रेस रखा।

यह आस्था का एक ऐसा संबंध है जिसे आज समकालीन वाल्डेन्सियन बहुत महत्व देते हैं। कम से कम, कोई यह अनुमान लगा सकता है कि वाल्डेन्सियन विश्वास के कई सिद्धांत 8वीं शताब्दी के बिशप क्लाउड की शिक्षाओं के मंत्रालय के समान हैं। हालाँकि, यह दावा करना पूरी तरह से निराधार है कि बिशप क्लाउड के समय से विश्वासियों का एक संगठित समुदाय शुरू हुआ और 9वीं शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक कैथोलिक चर्च से अलग, अलग और अलग रहा, जब वाल्डो ने अपना मंत्रालय शुरू किया।

अब हम इस बात पर ध्यान देते हैं कि ये मिथक क्यों बनाए गए थे। ऐसे संकेत हैं कि बुक ऑफ द इलेक्ट के गुमनाम लेखक ने उस समाज में वाल्डेन्सियन इतिहास के लिखित पाठ की आवश्यकता को पहचाना जो अभी भी मौखिक संचार पर बहुत अधिक केंद्रित था। इसे इस तरह से रचा गया था कि इसे याद रखना आसान हो और इसे उन वाल्डेन्सियन लोगों के लिए एक शिक्षाप्रद शैक्षिक उपकरण के रूप में मौखिक रूप से संप्रेषित करना आसान हो, जो उस समय तक पश्चिमी यूरोप में बिखरे हुए थे।

उन्हें एक ऐसे इतिहास की आवश्यकता थी जिसे लिखित पाठ पर निर्भरता के बिना आसानी से सुनाया जा सके। अपने पूरे इतिहास में, रोमन कैथोलिक जिज्ञासुओं ने वाल्डेन्सियन अभिलेखों, लेखन और पुस्तकों को नष्ट कर दिया, जिससे वाल्डेन्सियन की उत्पत्ति के संरक्षण के लिए मौखिक परंपरा और भी महत्वपूर्ण हो गई। जैसे-जैसे पीढ़ियाँ बीतती गईं, अतीत के पुनर्निर्माण में अधिक स्वतंत्रता की अनुमति देने का अवसर बढ़ता गया।

इस दृष्टिकोण के कारण मिथकों में कई संशोधन किए गए क्योंकि बाद की पीढ़ियों ने अपने विश्वास की उत्पत्ति के बिंदु को पीछे की ओर पढ़ने की कोशिश की। द बुक ऑफ द इलेक्ट एक बहुत ही छोटा, काव्यात्मक दस्तावेज़ था। इसमें से कुछ स्टैकाटो लयबद्ध वाक्यांशों में लिखे गए हैं, जो वाल्डेज़ के जीवन की गिनती के दौरान सबसे तीखे थे।

पाठ की संक्षिप्तता और लय दोनों ही यह संकेत देते हैं कि पाठ को जानबूझकर याद रखने के लिए तैयार किया गया है। चुने हुए लोगों की पुस्तक में पाया गया आख्यान मूल रूप से गरीबी और शुद्धता की शपथ को अपनाने के साथ-साथ प्रचार करने के आह्वान और वाल्डेन्सियन घुमंतू उपदेशक के जीवन में उनकी भूमिका को सही ठहराने के लिए एक उपयोगी उपकरण था। यह पुस्तक रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा उत्पीड़न के सामने सभी अनुयायियों को दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करने के अपने प्रयासों में भी शिक्षाप्रद है, क्योंकि प्रेरितों के शुरुआती चर्च को रोमन साम्राज्य द्वारा उत्पीड़न का सामना करना पड़ा था, जिससे वाल्डेन्सियन की खुद को धनी रोमन कैथोलिक चर्च के विपरीत सच्चे चर्च के वफादार अवशेष के रूप में देखने की धारणा की वैधता को मान्य किया गया।

13वीं शताब्दी में इनक्विज़िशन की स्थापना से लेकर चर्च द्वारा स्वीकृत उत्पीड़न की लहर के दौरान, खुद को चर्च के सच्चे अवशेष के रूप में वर्णित करने वाली कथा ने उनके वफादार गवाह को बनाए रखा। कॉन्स्टेंटाइन द्वारा सिल्वेस्टर को दान देने के मिथक के बाद के संशोधनों का पता बुक ऑफ द इलेक्ट के बाद के संस्करणों में हुए परिवर्तनों को देखकर लगाया जा सकता है। 12वीं शताब्दी में वाल्डेस, और फिर भी 14वीं शताब्दी तक वाल्डेस को दिए गए पहले नाम का कोई रिकॉर्ड नहीं है।

1367 में बुक ऑफ द इलेक्ट के पहले संस्करण में, 12वीं सदी के वाल्डेस को पहली बार प्रेरितिक नाम पीटर के साथ पेश किया गया। 1420 तक, बुक ऑफ द इलेक्ट के बाद के संशोधन में, पीटर वाल्डेस नामक एक व्यक्ति को पहली बार 14वीं सदी के पोप सिल्वेस्टर के समकालीन के रूप में पेश किया गया। उस संस्करण में, यह दावा किया गया है कि पीटर वाल्डेस वाल्डेन्सियन आंदोलन के संस्थापक नहीं थे, लेकिन उन्हें सिल्वेस्टर के साथियों में से एक के रूप में पहचाना गया था, जो दान के समय सच्चे चर्च के संरक्षक बन गए, जो प्रभावी रूप से वाल्डेस और उनके अनुयायियों के बीच प्रेरितों के कार्य की स्थापना तक के संबंध का सुझाव देते हैं।

इसके अलावा, 15वीं शताब्दी की शुरुआत में, एक और वाल्डेन्सियन पांडुलिपि लिखी गई थी, जिसमें पीटर वाल्डेस नामक एक निश्चित रोमन कैथोलिक कार्डिनल को कुछ उपदेशात्मक लेखन का श्रेय दिया गया था। संशोधनवादी इतिहास के इन प्रत्येक उदाहरण से, यह स्पष्ट हो जाता है कि वाल्डेन्सियन की उत्पत्ति को बताने वाली कहानियों को 14वीं और 15वीं शताब्दियों में बार-बार संशोधित किया गया था। लेकिन वाल्डेन्सियन गवाह के इतिहास में इन संशोधनों के कारणों को और गहराई से समझने के लिए, हमें सैकड़ों वर्षों तक उत्पीड़न की भूमिका पर एक और नज़र डालने की ज़रूरत है।

एक पीढ़ी के भीतर, जब वाल्डेन्सियन आंदोलन और उसके अनुयायियों को 1215 में कैथोलिक चर्च द्वारा विधर्मी करार दिया गया, तो चर्च ने वाल्डेन्सियन के खिलाफ अपने गुस्से को एक बेहद सुव्यवस्थित अभियोजन पक्ष के चर्च न्यायालय प्रणाली के माध्यम से निर्देशित किया, जिसे इनक्विज़िशन कहा जाता है, जिसे शुरू में कैथारिज्म के द्वैतवादी पाखंड को नष्ट करने के लिए बनाया गया था और अब से यह वाल्डेस के अनुयायियों के खिलाफ अपना पूरा गुस्सा दिखा रहा था। अगले 30 वर्षों में, इनक्विज़िशन ने सभी जिज्ञासुओं को पोपसी द्वारा वितरित निर्देश के लिखित मैनुअल के निर्माण को बड़े पैमाने पर संगठित और मानकीकृत किया। इनक्विज़िशन के प्रभावी अभियोजन को एकीकृत करने के प्रयास में, इनक्विज़िशन को अंततः कैथोलिक ऑर्डर ऑफ सेंट डोमिनिक को विशेष रूप से सौंपा गया था।

डोमिनिकन के अधीन, कैथोलिक चर्च के पास सभी विधर्मियों को मुकदमे में लाने के लिए सबसे प्रभावी उपकरण था। डोमिनिकन ने विधर्मियों को दंडित करने के लिए सिविल मजिस्ट्रेटों के साथ चर्च के प्रयासों का समन्वय किया, ज्यादातर बार फांसी देकर और उन्हें सूली पर जलाकर। 1480 के दशक के दौरान, पोप इनोसेंट VIII, जिन्होंने पोप बनने से पहले खुद एक जिज्ञासु के रूप में काम किया था, ने वाल्डेन्सियन के खिलाफ एक पवित्र धर्मयुद्ध का आह्वान किया।

ऐसा करके, उन्होंने हर वाल्डेन्सियन आस्तिक के पूर्ण उन्मूलन के लिए चर्च के पूरे क्रोध का प्रयोग किया। आर्कडेकन कैटेनेओ के नेतृत्व में वाल्डेन्सियन धर्मयुद्ध ने अपना ध्यान कोटियन आल्प्स के क्षेत्र में वाल्डेन्सियन समुदायों पर केंद्रित किया और केवल आंशिक रूप से सफल साबित हुआ। हालाँकि, इसके क्रूर और अमानवीय उत्पीड़न का सामना करने वाले हजारों वाल्डेन्सियन पीड़ितों पर इसके विनाशकारी परिणाम हुए।

डोमिनिकन के अधिकार के तहत इनक्विजिशन के संगठन के समय से, 13वीं शताब्दी के मध्य से शुरू होकर, न केवल हजारों वाल्डेन्सियन की संपत्ति जब्त कर ली गई और रोमन कैथोलिकों को बेच दी गई, बल्कि कई वाल्डेन्सियन को यातना दी गई, अक्सर उनकी मान्यताओं के लिए उन्हें जलाकर मार दिया गया। कैथोलिक चर्च का मानना था कि विधर्मियों के शवों को जलाने से, जब मसीह दूसरे आगमन के लिए वापस आएंगे तो पुनर्जीवित होने के लिए कोई भौतिक शरीर नहीं होगा। इनक्विजिशन के शुरुआती दिनों में, उन्होंने उन लोगों की लाशों को भी जला दिया, जिनकी मृत्यु के बाद वाल्डेन्सियन के रूप में पहचान की गई थी।

वाल्डेन्सियन बच्चों को अक्सर रोमन कैथोलिक पादरियों और चर्च के नेताओं द्वारा उनके परिवारों से चुरा लिया जाता था और चर्च द्वारा उन्हें रोमन कैथोलिक सिद्धांत अपनाने के लिए पाला जाता था। उत्पीड़न ने पूरे वाल्डेन्सियन आंदोलन और सैकड़ों वर्षों तक हर वाल्डेन्सियन आस्तिक के जीवन पर बहुत दबाव डाला। महान उत्पीड़न में नेताओं और विश्वासियों के विश्वास को मजबूत करने के साधन के रूप में, चुने हुए लोगों की पुस्तक ने यीशु की शिक्षाओं और प्रारंभिक प्रेरितिक विश्वास समुदायों के साथ अपने सीधे संबंधों के साथ वाल्डेन्सियन आंदोलन की स्थायी विरासत को मजबूत करने का काम किया।

वाल्डेन्सियन इतिहास की पौराणिक समझ पर विचार करते हुए, पीटर बिलर लिखते हैं कि इतिहास को काफी तीव्रता से याद किया जा सकता है, लेकिन समय बीतने और स्मृति की चालों के माध्यम से इसे सरल और मिश्रित भी किया जा सकता है और व्यक्तिगत मित्र के दिमाग के प्रिज्म से गुजरते समय कई तरीकों से रंगीन और कोणीय बनाया जा सकता है। ये सभी व्युत्पत्तियाँ अंततः उस युग में उत्पीड़न की पीड़ा और निराशा के दौरान विश्वासियों को सांत्वना देने के लिए इतिहास के व्यापक उपयोग का सुझाव देती हैं। वाल्डेन्सियन प्रचारकों, बारबा और उनके विश्वास के बिखरे समुदायों की दृढ़ प्रकृति ने न केवल रोमन कैथोलिक चर्च के अथक उत्पीड़न का सामना किया, बल्कि बाद में फ्रांस के राष्ट्र, सेवॉय के राजा द्वारा आयोजित ठोस सैन्य हमलों को 500 से अधिक वर्षों तक झेला

उस समय के दौरान, यह बारबा का मसीह द्वारा प्रदर्शित विनम्रता और ईश्वर और यीशु मसीह की कृपा पर केंद्रित विश्वास को एकीकृत करने पर जोर था जिसने वाल्डेन्सियन लोगों को उनके विश्वास के प्रति सच्चे रहने के प्रयासों में मार्गदर्शन किया। प्राचीन मिथक ऐसी अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में विकसित हुए और वाल्डेन्सियन प्रचारकों और उनके अनुयायियों के लिए एक मजबूत और ठोस विश्वास होना आवश्यक हो गया, जिसे वे मृत्यु के समय भी बनाए रख सकते थे। अपने उद्देश्य की पवित्रता में विश्वास के बिना और मसीह और उनके मूल शिष्यों के साथ सीधे संबंध की भावना के बिना, वाल्डेन्सियन आंदोलन, पीढ़ियों के अथक दबाव के तहत, मध्य युग के

हर दूसरे आंदोलन की राह पर चला गया होता, जिसे रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा विधर्मी करार दिया गया था।

प्रोटेस्टेंट सुधार के पहले दशकों के दौरान, जब प्रोटेस्टेंटवाद अपनी विश्वसनीयता और वैधता स्थापित कर रहा था, तब प्रोटेस्टेंट विद्वानों की एक बड़ी संख्या ने वाल्डेन्सियन को अपने धार्मिक पूर्वजों के रूप में इंगित किया, जो उनके मूल के बारे में मिथकों को उठाते थे। प्रोटेस्टेंट वाल्डेन्सियन को अपने स्वयं के विश्वास के अग्रदूतों के रूप में देखते थे और उन्हें सच्चे चर्च के संरक्षक के रूप में पहचानते थे। शुरुआती वाल्डेन्सियन इतिहासकारों जॉन लेगर और सैमुअल मोरलैंड ने 17वीं शताब्दी की शुरुआत में वाल्डेन्सियन इतिहास के अपने संकलन में उनके मूल के बारे में कई मिथकों का संदर्भ दिया।

अपने समय और समय में समझे जाने वाले इतिहासलेखन के विज्ञान के उपकरणों का उपयोग करते हुए, उन्होंने वाल्डेन्सियन समुदाय के इतिहास के पहले प्रमुख कार्यों को विकसित किया जो रिकॉर्ड किए गए थे। दोनों इतिहासकारों ने पिछली पीढ़ियों से पारित मौखिक इतिहास पर बहुत अधिक भरोसा किया था क्योंकि वे एक विश्वसनीय इतिहास को संरक्षित करने की कोशिश कर रहे थे। उस समय इतिहासलेखन का यह एक स्वीकार्य तरीका था कि ऐतिहासिक सटीकता को आत्म-पहचान के बारे में लंबे समय से चली आ रही और अभी तक असमर्थित ऐतिहासिक मान्यताओं के साथ मिलाया जाए, जो गुप्तता, भौगोलिक अलगाव और उत्पीड़न के मामले में सामने आई थी।

आज, इतिहास एक विश्वसनीय गवाह के रूप में कार्य करता है कि वाल्डेन्सियन आंदोलन एकमात्र ईसाई आंदोलन था जिसे रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा विधर्मी माना गया था, और यह आधुनिक समय में भी जीवित है। यह वाल्डेन्सियन लोग थे, जो अपने प्रचारकों, बारबा के नेतृत्व में थे, जिन्होंने प्रोटेस्टेंट सुधार से पहले ईसाई धर्मावलंबियों को यीशु की शिक्षाओं और उनके जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के प्रभाव को संप्रेषित करने पर सबसे प्रभावी और सटीक रूप से ध्यान केंद्रित किया। उस पूरे युग में, वाल्डेन्सियन ने यीशु की शिक्षाओं और प्रेरित पौलुस के निर्देशों के प्रति एक वफादार बाइबिल की गवाही को दर्शाया जब उसने तीमुथियुस को लिखा था।

इस तरह के निर्देश का उद्देश्य शुद्ध हृदय, अच्छे विवेक और सच्चे विश्वास से उत्पन्न होने वाला प्रेम है। इस तरह के विश्वासों और प्रथाओं का सार आज भी एक वफादार ईसाई गवाह के मूल में बना हुआ है, जैसा कि हर युग में रहा है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर।

आमीन। यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या छह है, इतिहास की छाया से बाहर, मिथकों को दूर करना।